12. दक्षिण भारत
(South India)

संगम काल

☞ 100 ई. से 250 ई. के मध्य दक्षिण भारत में पांड्य राजाओं के संरक्षण के कवियों के 3 विशाल सम्मेलन बुलाए गए। इन सम्मेलन को ही तमिल भाषा में संगम कहते हैं।
☞ इन्हीं कवियों के द्वारा सभा में कई तमिल साहित्य की रचना की गई। इन्हीं तमिल साहित्य को संगम साहित्य भी कहा जाता है।

➢ **इतिहास में 3 संगमों का वर्णन मिलता है–**

1. प्रथम संगम

☞ यह दक्षिणी मदुरै में आयोजित हुआ था।
☞ इसकी अध्यक्षता अगस्त्य ऋषि ने की।
☞ इस सम्मेलन में 89 राजाओं ने भाग लिया।
☞ वर्तमान में दक्षिणी मदुरै जलमग्न हो गया है। जिस कारण इस संगम में लिखे गए साहित्य की कोई जानकारी नहीं है।

2. द्वितीय संगम

☞ यह कपाटपूरम (अलैव) में आयोजित हुआ था।
☞ प्रारंभ में इसकी अध्यक्षता अगस्त्य ऋषि ने की किन्तु बाद में ''तोलकापिय्यर'' ने की।
☞ इसी सम्मेलन में ''तोलकापिय्यर'' ने ''तोलकापिय्यम'' नामक तमिल साहित्य की रचना की।
☞ इस संगम में 59 राजाओं ने हिस्सा लिया।

3. तृतीय संगम–

☞ इसकी अध्यक्षता ''नक्किरर'' ने किया।
☞ इसमें 49 राजाओं ने हिस्सा लिया।
☞ इस संगम में लिखे गए साहित्य का भी कोई स्पष्ट साक्ष्य नहीं मिला है।
☞ यह उत्तरी मदुरै में आयोजित हुआ था।

Note :–

1. तीनों ही सम्मेलन तमिलनाडु में किए गए हैं।
2. अगस्त्य ऋषि (काशी) बनारस के रहने वाले थे जो तमिलनाडु में बस गए।

☞ अगस्त्य ऋषि को तमिल साहित्य का जनक माना जाता है।
☞ पांड्य राजाओं के द्वारा इन संगमो को शाही संरक्षण प्रदान किया गया।

संगम काल के राज्य

☞ कृष्णा नदी के दक्षिण में अर्थात् भारत के सुदूर दक्षिण में 3 राज्यों का उदय हुआ।

1. चोल
2. चेर
3. पांड्य।

चोल वंश

☞ संगम काल के वंशों में सबसे प्राचीन चोल था। इसका अर्थ होता है– नया देश।
☞ इसके बारे में प्रथम जानकारी पाणिनी की रचना अष्टाध्यायी से मिलती है।
☞ चोल साम्राज्य तमिलनाडु के पूर्वी भाग में था।
☞ इसकी प्रथम राजधानी 'उरई-ऊर' थी।
☞ इसकी मुख्य राजधानी तंजौर (तमिलनाडु) में स्थित था।
☞ इस वंश की दूसरी राजधानी कांचीपूरम् (तमिलनाडु) में बनाई गयी थी।
☞ इनका राजकीय चिन्ह बाघ था।
☞ उरई-ऊर सूती वस्त्र के लिए विश्व प्रसिद्ध था।
☞ ऐसा कहा जाता है कि इस समय के सूती वस्त्र साँप की केंचुली (पोआ) से भी पतले होते थे।
☞ चोल साम्राज्य कावेरी नदी के उपजाऊ मैदान में था। जिस कारण कहा जाता है कि जितने क्षेत्र पर एक हाथी सोता था, उतने ही क्षेत्र पर उतना अनाज उगाया जा सकता है जिससे 1 वर्ष तक 7 लोगों का पेट भरा जा सकता है।
☞ चोल वंश का पहला शासक ''विजयालय'' था।
☞ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक करिकाल था। इसने श्रीलंका को जीत लिया और वहाँ से 12,000 द्वार लाया और कावेरी नदी पर 160 m लंबा बाँध बनवाया।
☞ यह भारत का पहला बाँध था। इसे Grand बाँध कहते है।
☞ करिकाल ने पुहार नामक बंदरगाह बनवाया जिसे ''कावेरी पटनम्'' कहते हैं।
☞ एलोरा तथा पेरूनरकिल्ली इस वंश के अन्य शासक थे।
☞ चोल वंश 5वीं सदी आते-आते अत्यंत कमजोर हो गया और सामंती जीवन जीने लगा।
☞ 8वीं सदी में पुन: चोलों का उदय हुआ।

चेर वंश

☞ चेर का अर्थ होता है– पर्वतीय देश।
☞ ऐतरैय ब्राह्मण ग्रंथ में इसे चेरापद कहा गया है।
☞ अशोक के द्वितीय शिलालेख में इसे केरलपुत्र कहा गया है।

- इनका क्षेत्र केरल (मालाबार) में था।
- चेर वंश का प्रथम शासक उदियन जेरल था।
- यह केरल का प्राचीन नाम था।
- इनकी राजधानी बंजी/करूर थी।
- इनका राज्य चिह्न धनुष था।
- उदियन जेरल ने महाभारत युद्ध के सैनिकों के लिए भोज करवाया था।
- अगला शासक शेनगुट्टवन था, इसे लाल-चेर भी कहते हैं।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक शेनगुट्टवन था।
- शेनगुट्टवन ने पत्नीपूजा (कण्णगी पूजा) प्रारंभ किया। इस पूजा में उसने श्रीलंका तथा पड़ोस के राजाओं को भी आमंत्रित किया।
- इस वंश का अगला शासक आदीगमान था, जिसने गन्ने की खेती प्रारंभ की।
- चेर वंश का अंतिम शासक कुडक्कईय्यल जेरल था। जिसे हाथी की आँख वाला कहा जाता था।
- इसी शासक के समय पेरून जेरल पिरपोरई विद्वानों का संरक्षक था।
- इस वंश का प्रमुख बंदरगाह मुजरिस (रोमन व्यापार केन्द्र) था।
- दूसरी सदी के अंत में (190 ई.) चेर वंश समाप्त हो गया।

पांड्य वंश

- **इसका अर्थ होता है–** प्राचीन देश।
- इसकी राजभाषा तमिल थी।
- यह मातृ सत्तात्मक था तथा मोतियों के लिए प्रसिद्ध था।
- पांड्य राजाओं ने ही तीनों संगम का अयोजन करवाया था।
- पांड्य वंश की प्रथम जानकारी मेगास्थनीज की पुस्तक 'इण्डिका' से मिलती है।
- पांड्य वंश का क्षेत्र तमिलनाडु के दक्षिणी भाग में था।
- इनकी राजधानी मदुरै थी।
- इनका राजकीय चिन्ह मछली (कार्प) था।
- पांड्य वंश का प्रथम शासक नोडियोन था।
- इसने समुद्र पूजा प्रारंभ की।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक नेडूजेलियन था।
- इसने 290 ई. में हुए 'तलैयालंगानम'' के युद्ध में चेर, चोल तथा 5 अन्य राजाओं को एक साथ पराजित कर दिया।
- इस वंश का अंतिम शासक नल्लि वकोडन (मरावर्मन राजसिम्हा तृतीय) था।
- 5वीं सदी आते-आते पाण्ड्य वंश अस्तित्व विहिन हो गया।
- पांड्य वंश के राजाओं का रोम के राजा से अच्छा संबंध था। इन्होंने अपने दूत रोम के राजा आगस्टसा के दरबार में भेजा था।
- पांड्य वंश की राजधानी मदुरै को त्योहारों का शहर कहते हैं।
- यहाँ का मीनाक्षी मंदिर विश्व-प्रसिद्ध हैं।
- अशोक के शिलालेख, महाभारत एवं रामायण से इस वंश की जानकारी मिलती है।
- मेगास्थनीज ने इस वंश को माबर नाम से वर्णन किया है।
- श्रीमरा श्रीवल्लभा अपने शासन काल में कई सिचांई परियोजनाएँ शुरू करवायी थी तथा इसके निर्माण में ईंट और ग्रेनाइट का प्रयोग किया गया था।
- मरावर्मन राजसिह्मा तृतीय एक ऐसा पाण्डय शासक था जिसने कुडम्बलूर में तंजावूर के चोल राजा का विरोध किया था।
- शिल्पादिकारम् पुस्तक में नेदुन्जेलियन प्रथम का वर्णन मिलता है। यह पुस्तक तमिल साहित्य के प्रथम महाकाव्य के रूप में जाना जाता है।

संगम कालीन आर्थिक जीवन

- इस युग में लोगों की आजीविका का मूल आधार कृषि थी तथा संपन्न कृषकों को 'वेल्लार' कहा जाता था।
- इस समय भूमि कर सामान्यत: उपज का 1/6 भाग होता था।
- यहाँ काली मिर्च का उत्पादन अधिक होता था। यवनों को यह अत्यधिक प्रिय होने के कारण इसे **'यवनप्रिय'** कहा जाता था।
- संगम काल सूती वस्त्र, मसाला, मोती, कृषि तथा पशुपालन के लिए प्रसिद्ध था।
- इस समय उरैयूर सूती वस्त्र विश्व में सबसे अधिक प्रसिद्ध था।

संगम कालीन व्यापार

- संगम काल में रोम से सर्वाधिक व्यापार होते थे।
- तमिलनाडु के अरिकमेडू (पांडिचेरी) से रोम का सर्वाधिक व्यापार होता था।
- इस काल में व्यापारी वर्ग को बेनिगर कहते थे।

संगम कालीन जाति व्यवस्था

- संगम काल में उत्तर-भारत के विपरीत जाति व्यवस्था थी।
- यहाँ सामंत तथा दास में समाज बटा हुआ था।
- यहाँ वर्ण व्यवस्था या ऊँच-नीच की जाति व्यवस्था नहीं थी।
- संगम काल में अस्पृश्यता थी, लेकिन दास प्रथा का उल्लेख नहीं मिलता है।

संगम कालीन धार्मिक जीवन

- संगम काल में सबसे प्रुख देवता मुरुगन थे, जिन्हें वर्तमान में सुब्रमण्यम् कहा जाता है।
- दूसरे प्रमुख देवता कार्तिकी (गणेश जी के भाई) थे।

संगम कालीन प्रशासनिक व्यवस्था

- इस युग में वंशानुगत राजतंत्र था जिसमें सारी शक्तियाँ राजा में ही निहित होती थी।
- न्याय का सर्वोच्च अधिकारी राजा ही होता था।
- राजा के न्यायालय को 'मन्रम' कहा जाता था।
- सेनापति 'एनाडि' की उपाधि धारण करते थे।
- संपूर्ण राज्य को 'मण्डलम्' कहा जाता था। मण्डलम् के बाद 'नाडू' नाडु के बाद 'उर' होता था।

संगम कालीन बंदरगाह

- संगमकाल के तीनों ही वंश के पास अपने-अपने बंदरगाह थे।

(i) चेर-बंदरगाह → बंदर-चेर
(ii) चोल-बंदरगाह → पुहार तथा उरई
(iii) पांड्य-बंदरगाह → शालीयूर एवं कोरकाय

➢ **संगम कालीन साहित्य**

☞ संगम साहित्य तमिल भाषा में लिखे गए।
☞ इन्हें तमिलकम या द्रविड़ साहित्य भी कहते हैं, जो निम्नलिखित हैं।

(i) तोलकाप्पियम– इसका संबंध व्याकरण से है। इसकी रचना तोलकाप्पियर ने की थी।

(ii) तिरुक्कूराल या कूराल– इसे तमिल साहित्य का बाईबील (एंजिल) कहते हैं।

(iii) जीवक चिन्तामणि– इसका संबंध जैन धर्म से है। इसकी रचना तिरूत्क्कदेवर ने की है।

(iv) शिल्पादिकारम– इसका संबंध जैन धर्म से है। इसमें नुपूर (पायल) की कहानी है। इसे तमिल काव्य का इलियट भी कहा जाता है। इसकी रचना इलांगोआदिगल ने की थी।

☞ राजा कोवलन अपनी पत्नी कन्नगी को छोड़कर माध्वी नामक नर्तकी के प्रेम में फंस जाता है और अपने धन को लुटाने के बाद उसे पश्चाताप होता है और अपनी पत्नी के पास लौटता है। उसकी पत्नी कन्नगी ने उसे अपना एक पायल दिया, जिसे बेचकर वे मदुरै में व्यापार प्रारंभ किया, किन्तु कोवलन पर मदुरै की रानी की पायल चुराने का आरोप लगा दिया गया और उसे फांसी दे दी गई।
☞ कोवलन की पत्नी कन्नगी ने श्राप दे दिया, जिससे मदुरै शहर नष्ट हो गया।

(v) मणिमेखले– इसका संबंध भी बौद्ध धर्म से है। इसमें कोलवन तथा माध्वी से उत्पन्न संतान मणिमेखलम् की चर्चा है, जिसने अंतत: बौद्ध धर्म अपना लिया था। इसकी रचना शीतलैशत्नार द्वारा किया गया था। इसे तमिल काव्य की ओडिशी भी कहा जाता है।

वाकाटक वंश

☞ सातवाहन वंश के अंत के बाद उनके क्षेत्र पर वाकाटक वंश का आगमन हुआ।
☞ इन्होंने अपनी राजधानी बरार को बनाया था।
☞ ये ब्राह्मण धर्म को मानते थे। (ये शैव सम्प्रदाय के थे।)
☞ इस वंश की स्थापना विंध्य शक्ति (255 ई०) ने किया था।
☞ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक प्रवरसेन प्रथम थे। इन्होंने 4 अश्वमेघ यज्ञ तथा 1 वाजपेय यज्ञ का आयोजन किया।
☞ इस वंश के शासक रूद्रसेन का विवाह प्रभावती से हुआ।
☞ प्रभावती, चंद्रगुप्त-II तथा देवी की पुत्री थी।
☞ इस विवाह के कारण गुप्त तथा वाकाटक के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हुआ।
☞ समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख से वाकाटक की जानकारी नहीं मिलती है, क्योंकि इस अभिलेख में केवल जीते गए क्षेत्र की चर्चा है।
☞ वाकाटक वंश का अंतिम शासक पृथ्वी सेन द्वितीय था।
☞ वाकाटक की शक्ति धीर-धीरे कमजोर हो गई और इनके स्थान पर चालूक्य वंश का उदय हो गया।

चालुक्य वंश (550 ई.-757 ई.)

➢ **सतपुड़ा पर्वत के दक्षिण में चालुक्य वंश का उदय हुआ। इनकी 3 शाखाएँ थी–**

(i) वातापी/बादामी, (ii) कल्याणी एवं
(iii) बेंगी।

चालुक्य (वातापी/बादामी)

☞ वातापी का वर्तमान नाम बादामी है।
☞ यह तीनों चालुक्य में सबसे पश्चिम में स्थित था।
☞ इसी ने चालुक्य की नींव रखी थी।
☞ इस वंश के संस्थापक जयसिंह थे। जिसके बारे में जानकारी कैरा ताम्रपत्र अभिलेख से प्राप्त होता है।
☞ इसने सामंत के रूप में शासन किया। क्योंकि यह स्वतंत्र शासक नहीं थे।
☞ इन्होंने वातापी (कर्नाटक) को अपनी राजधानी बनाया।
☞ पुलकेशिन-II इस वंश का सबसे प्रतापी और महान शासक था। जिसके बारे में जानकारी एहोल अभिलेख से मिलती है।
☞ इसने नर्मदा नदी को पार करके कन्नौज के शासक हर्षवर्धन को पराजित कर दिया।
☞ इसने दक्षिण भारत में पल्लव शासक महेन्द्र वर्मन को पराजित कर दिया तथा उसकी राजधानी कांची को जीतकर कांचीकोंड की उपाधि धारण कर लिया।
☞ पुलकेशिन-II ने दुबारा पल्लव पर आक्रमण किया। किन्तु पल्लव शासक नरसिंह वर्मन ने इसे पराजित कर दिया और उसका पीछा करते हुए उसकी राजधानी वातापी तक पहुँच गया एवं वातापी जीतकर वातापीकोंड की उपाधि धारण कर ली और पुलकेशिन-II की हत्या कर दी।
☞ इसके अतिरिक्त इन्होंने वातापी में स्थित मल्लिकार्जुन मंदिर के दीवार पर अपना एक अभिलेख खुदवाया।
☞ पुलकेशिन-II के दरबार में 641 ई. में चीनी यात्री ह्वेनसांग आया था।
☞ पुलकेशिन-II ने ईरान के राजा खुसरो-II के दरबार में अपना एक दूत मंडल भेजा था।
☞ पुलकेशिन-II के राजकीय कवि रविकिर्ति था।
☞ पुलकेशिन-II के बाद अगला शासक विक्रमादित्य बना। इन्होंने पल्लव की राजधानी काँची पर अधिकार करके अपने पिता के पराजय का बदला लिया किन्तु अपने शासन के अंतिम समय में पल्लव शासक परमेश्वरवर्मन से पराजय हो गया।

- विक्रादित्य प्रथम के बाद चालुक्य वंश का अगला शासक विनयादित्य बना। इसके समय चालुक्य वंश का सर्वाधिक विकास हुआ। इन्होंने सकलेत्तरपथनाथ की उपाधि धारण की। जिसका अर्थ होता है– संघर्ष पर विराम लगाने वाला।
- विनयादित्य के मृत्यु के बाद अगला शासक विजयादित्य बना। इन्होंनें पट्टदक्कल (बीजापुर, कर्नाटक) में एक शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- पट्टदक्कल शिव मंदिर को विजेश्वर शिव मंदिर के नाम से जाना जाता है।
- विजयादित्य के बाद इस वंश का अगला शसक विक्रमादित्य-II बना। इन्होंने पल्लव राज्य पर आक्रमण करके उसके राजधानी कांची पर अधिकार करके कांचीकोण्ड की उपाधि धारण कर ली और साथ ही कांची में स्थित राजसिंहेश्वर मंदिर के दीवार पर एक अभिलेख खुदवाया।
- विक्रमादित्य द्वितीय की दो पत्नियाँ थी। इसकी पहली पत्नी लोकमहादेवी थी जो पट्टदक्कल में लोकेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण करवाई। इस मंदिर को विरूपाक्ष मंदिर के नाम से जाना जाता है।
- दूसरी पत्नी त्रिलोकीमहादेवी थी इन्होंने पट्टदक्कल में त्रिलोकेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण करवाया।
- इस वंश का अंतिम शासक कीर्तिवर्मन-II था।
- कीर्तिवर्मन-II की हत्या दन्तिदुर्ग ने कर दी और इसके स्थान पर राष्ट्रकूट वंश की स्थापना कर दी तथा चालुक्यों को अपना सामंत बना लिया।

कल्याणी का चालुक्य

- चालुक्य जो सामंत का जीवन जी रहे थे, राष्ट्रकूट की कमजोर स्थिति का फायदा उठा लिया और राष्ट्रकूट के अंतिम शासक कर्क-II की हत्या तैलप-II नामक चालुक्य ने कर दी।
- इस वंश को पश्चिमी चालुक्य भी कहा जाता है।
- कल्याणी के चालुक्य का संस्थापक तैलप–II था। इसकी राजधानी मानखेट थी।
- इस वंश का अगला शासक सोमेश्वर था। जिसने अपनी राजधानी मान्नखेट से कल्याणी स्थानान्तरित किया, जिस कारण इस वंश का नाम कल्याणी का चालुक्य हो गया।
- सोमेश्वर प्रथम ने अपने जीवनकाल में केवल चोलों पर विजय हासिल नहीं कर पाया और चोल शासक राजेन्द्र चोल से हारकर सोमेश्वर प्रथम ने करूवती के पास तुंगभद्रा नदी में डूबकर आत्महत्या कर ली।
- इस वंश का अगला शासक विक्रमादित्य-VI बना। यह एक कुशल योद्धा था।
- विक्रमादित्य-VI ने चोल के प्रभाव को रोक दिया। यह साहित्य प्रेमी था।
- इसके राजकीय कवि विल्हन थे।
- इन्होंने विक्रमांकदेव चरित नामक पुस्तक लिखी।
- इसके दरबार में मिताक्षर के लेखक विज्ञानेश्वर रहते थे। मिताक्षरा का संबंध हिन्दू कानून से था।
- इस वंश का राजचिन्ह् वाराह (सुअर) था।
- इस वंश के अंतिम शासक सोमेश्वर–IV थे।

बेंगी का चालुक्य

- यह चालुक्य की सबसे कमजोर शाखा थी, जो आंध्रप्रदेश के बेंगी में थी।
- इस वंश के संस्थापक विष्णुवर्धन थे।
- इस वंश की राजधानी बेंगी (आंध्रप्रदेश) थी।
- इस वंश में कोई भी प्रतापी शासक नहीं हुआ।
- इस वंश का सबसे योग्य शासक विजयादित्य-III था।

पल्लव वंश

- इस वंश के संस्थापक सिंह विष्णु थे।
- सिंह विष्णु को अवनि सिंह भी कहा जाता है।
- इस वंश की राजधानी कांची थी।
- यह दक्षिण भारत में कृष्णा और गोदावरी नदियों के बीच का प्रदेश था।
- इस वंश की प्रथम जानकारी हरिसेन की प्रयाग प्रशस्ति एवं ह्वेनसांग की यात्रा से मिलती है।
- इसका प्रारंभिक अभिलेख प्राकृत भाषा में एवं बाद में संस्कृत भाषा में मिले है।
- इसके दरबार में भारवि नामक विद्वान रहते थे। जिन्होंने किरातार्जुनीयम नामक पुस्तक लिखी है।
- इस वंश का अगला शासक महेन्द्रवर्मन था। जिसे वातापी के चालुक्य शासक पुलकेशिन-II ने पराजित कर दिया।
- पुडुकोट्टई की तिरूकोकर्णम्, कोकर्णेश्वर मंदिर और पल्लवारम् की पाँच शेल वाले गुफा मंदिर का निर्माण महेन्द्र वर्मन–I द्वारा कराया गया था।
- इस वंश का अगला शासक नरसिंह वर्मन था। इसके समय पुन: पुलकेशिन-II ने आक्रमण किया, किन्तु पुलकेशिन-II को नरसिंहवर्मन ने मार दिया और उसकी राजधानी वातापी को जीतकर वातापीकोण्ड की उपाधि धारण कर ली।
- इस वंश का अगला शासक नरसिंहवर्मन-II था।
- इसके दरबार में दण्डी नामक विद्वान रहते थे, जिन्होंने दासकुमार चरितम् नामक पुस्तक संस्कृत भाषा में लिखी।
- इस वंश का अंतिम शासक अपराजित था। जिसे चोल शासक आदित्य-I ने पराजित कर दिया और पल्लव के स्थान पर चोल वंश की स्थापना कर दी।
- 8वीं सदी के इस पल्लव वंश में शैव धर्म अधिक प्रचलित था।
- महेन्द्र वर्मन संगीत प्रेमी था।

- इसने कद्राचार्य को संगीत की शिक्षा दी थी।
- नरसिंहवर्मन-I ने महाबलीपुरम में एकश्मीय मंदिर बनवाया जिसे रथ मंदिर कहते हैं।
- नरसिंहवर्मन-I के दरबार में ह्वेनसांग आया था।
- नरसिंहवर्मन-II ने कांची में कैलाश मंदिर, सप्तपैगोडा के शोर मंदिर और महाबलीपुरम् का मंदिर बनवाया।
- इसी के समय भारत में अरब आक्रमण प्रारंभ हो गए।
- इस वंश में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र कांची था।
- महाबलीपुरम् के सप्त पैगोडा इसी वंश द्वारा स्थापित किया गया था।

चोल वंश (9वीं सदी) तंजौर

- चोल वंश के संस्थापक विजयालय थे। इन्हें चोल वंश का द्वितीय संस्थापक कहते हैं। इन्होंने नर केसरी की उपाधि धारण की थी।
- चोल प्रारंभ में पल्लवों के सामंत थे।
- पल्लवों के ध्वंशावशेष पर चोल वंश की नींव रखी गई।
- इन्होंने अपनी राजधानी तंजौर/तंजावुर को बनाया।
- 9वीं सदी में उभरा यह चोल वंश संगमकालीन चोल वंश की ही शाखा थी।
- इस वंश का अगला शासक आदित्य-I बना। इसने पल्लव शासक अपराजित को पराजित कर दिया। जिससे कि पल्लवों का अंत हो गया। इन्होंने कोदंडराम की उपाधि धारण किया था।
- चोल का अगला शासक परान्तक-I बना। इसने मदूरै जीतकर मदुरैकोण्ड की उपाधि धारण कर ली। इसकी जानकारी उतरमेरूर अभिलेख से मिलती है।
- परान्तक-I पहला ऐसा चोल शासक था। जिसने भूमि सर्वेक्षण करवाया था।
- परान्तक-I को राष्ट्रकूट शासक कृष्ण-III ने तक्कोलम् के युद्ध में पराजित कर दिया।
- चोल वंश का अगला शासक राजाराज बना। इनका मूल नाम अरिमोलीवर्मन था।
- इसने श्रीलंका के उत्तरी भाग को जीतकर चोल वंश में मिला लिया और मामुडी चोल की उपाधि धारण कर ली। किन्तु इन्होंने श्रीलंका को चोल साम्राज्य में शामिल नहीं किया।
- इसने अपनी राजधानी तंजौर में ''वृहदेश्वर'' मंदिर का निर्माण करवाया। ये शैव धर्म को मानते थे। इसने शिवपाद शेखर की उपाधि धारण किया।
- राजाराज अपने अंतिम दिनों में मालदीव पर भी अधिकार कर लिया और एक दूत मंडल को चीन भेजा।
- अगला चोल शासक राजेन्द्र-I बना। यह चोल वंश का सबसे प्रतापी शासक था। इसने श्रीलंका को पूरी तरह जीत लिया और वहाँ की राजधानी अनुराधापुर पर आक्रमण करके वहाँ के शासक महेन्द्र-V को बंदी बना लिया।
- राजेन्द्र-I ने बंगाल के शासक महिपाल को पराजित कर दिया और गंगईकोण्ड की उपाधि धारण कर ली और वहाँ से गंगाजल को लाया।
- इस शहर में उसने एक तालाब बनवाया और उसमें गंगाजल मिला दिया और इस तालाब का नाम चोलगंगम् रखा।
- अपनी राजधानी के बगल में एक नया शहर बसाया, जिसे गंगईकोण्ड चोलपुरम् कहते हैं।
- राजेन्द्र-I ने सुमात्रा (इण्डोनेशिया) पर आक्रमण किया और वहाँ के शासक शैलेन्द्र को पराजित कर दिया। राजेन्द्र प्रथम अरब सागर में स्थित सदिमन्तिक नामक द्वीप पर भी अधिकार कर लिया।
- राजेन्द्र प्रथम चोल वंश का पहला शासक था जिसने 72 सदस्यीय दूत मंडल चीन भेजा था।
- इसी वंश के शासक कोलोतुंग द्वितीय था। जिसने चिदम्बरम् मंदिर में स्थापित गोविंदराज (विष्णु) की मूर्ति को मंदिर से हटवाकर समुद्र में फेंकवा दिया था। जिसे रामानुजाचार्य ने समुद्र से निकलवाकर तिरुपति मंदिर में स्थापित करवाया।
- इस वंश के अंतिम शासक राजेन्द्र-III थे। जिनके बाद यह वंश स्वत: समाप्त हो गया।
- चोल काल की स्थानीय स्वशासन भारत का सबसे प्राचीन स्थानीय स्वशासन है। इस समय स्थानीय स्वशासन का चुनाव लौटरी पद्धति द्वारा होता था।
- चोल प्रशासन में महत्वपूर्ण पद राजा का होता था। राजा को सहायता देने के लिए मंत्रिपरिषद् होती थी।
- चोल प्रशासन में भाग लेने वाले उच्च श्रेणी के अधिकारी को पेरून्दनम् तथा निम्न श्रेणी के अधिकारी को शेरून्दनम् कहा जाता था।
- इस समय राजा का उच्च अधिकारी को उड्डनकुट्टम कहा जाता था।
- इस समय अधिकारियों को वेतन न देकर भूमि अनुदान के रूप में दिया जाता था। इस समय प्रशासन की सुविधा के लिए पूरे चोल साम्राज्य को छ: प्रांतों में बांटा गया था। उस प्रांत को मंडलम् कहा जाता था।
- प्रांत या मंडलम् को कोट्टम(कमिश्नरी) में, कोट्टम को नाडू (जिला) में बांटा गया था।
- नाडू (जिला) को कई कुर्रम (ग्राम समूह) में बांटा गया था।
- चोल काल में आय का मुख्य स्रोत भू-राजस्व था।
- चोलों की नौसेना सबसे शक्तिशाली थी।
- चोल काल में शिव मंदिरों का निर्माण हुआ, जो द्रविड़ शैली में बने थे।
- द्रविड़ शैली को विमानम् शैली भी कहते हैं।
- विमानम् शैली का प्रथम उपयोग तंजौर के वृहदेश्वर मंदिर में किया गया।
- चोल काल में निर्मित नटराज प्रतिमा सांस्कृतिक धरोहर था।

- चोल काल को तमिल भाषा का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- तमिल साहित्य के त्रिरत्न के रूप में कंबन, ओट्टककुट्टन एवं पुगलेन्दी थे।
- कंबन ने तमिल रामायण की रचना किए।

राष्ट्रकूट वंश (7वीं-9वीं)

- इस वंश के संस्थापक दन्ति दुर्ग थे। इन्होंने वातापी के चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन-II को हराकर राष्ट्रकूट की नींव रखी किन्तु उन्होंने चालुक्यों का पूरी तरह सफाया नहीं किया जो कि इनकी सबसे बड़ी भूल साबित हुई।
- दन्तिदुर्ग ने अपनी राजधानी मान्यखेत (मालखण्ड) को बनाया।
- दंतिदुर्ग ने महाधिराज, परमेश्वर और परम्भट्टारक उपाधियाँ धारण की।
- इस वंश का अगला शासक कृष्ण-I था। जिसने महाराष्ट्र में एलोरा के कैलाश मंदिर बनवाया।
- इस वंश का अगला शासक ध्रुव बना, जिसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया। त्रिपक्षीय संघर्ष 100 वर्षों तक चला। इसमें सर्वाधिक जीत राष्ट्रकूटों की हुई थी। किन्तु अंतिम विजय प्रतिहार की हुई। इनमें सर्वाधिक पराजय पाल शासकों की हुई।
- इस वंश का अगला शासक अमोघवर्ष बना। यह सबसे विद्वान शासक था। इसने कविराज मार्ग नामक पुस्तक लिखी तथा जिनसेन के प्रभाव में आकर जैन धर्म अपना लिया।
- इसके दरबार में कन्नड़ भाषा के त्रि-विद्वान कहे जाने वाले पन्न-पोन्न-रन्न रहते थे।
- शांतिपुराण की रचना पोन्न द्वारा किया गया था।
- इस वंश का अगला शासक इन्द्र-III बना। इसके दरबार में अलमसूदी नामक अरब यात्री आया था।
- अलमसूदी ने ही पहली बार मानसून का वर्णन किया।
- इस वंश का अगला शासक कृष्ण-III बना। इसने तक्कोलम के युद्ध में चोल शासक परान्तक-I को पराजित कर दिया।
- इस वंश का अंतिम शासक कर्क-II था, जो एक अयोग्य शासक था। इसकी हत्या तैलप-II ने कर दी और चालुक्य वंश की पुन: स्थापना कर दी।
- तैलप-II का चालुक्य वंश कल्याणी का चालुक्य कहलाया।

पाल वंश (7वीं-11वीं)

- पाल वंश के संस्थापक गोपाल थे।
- पाल वंश के शासक बौद्ध धर्म के वज्रयान शाखा के अनुयायी थे।
- पाल वंश बिहार-बंगाल के क्षेत्र में था।
- पाल वंश की राजधानी मुंगेर थी।
- उन्होंने बिहारशरीफ (नालंदा) में ओदंतपुरी विश्वविद्यालय की स्थापना की।
- पाल वंश का अगला शासक धर्मपाल था।
- इसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया किन्तु इनकी पराजय हुई और इसी कारण पाल साम्राज्य का विकास रूक गया।
- धर्मपाल ने भागलपुर (बिहार) में विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा बांग्लादेश में सोनपुर महाविहार की स्थापना की।
- उत्तरापथ स्वामी का उपाधि धर्मपाल ने धारण किया और इस उपाधि से गुजराती कवि सोट्ठल ने संबोधित किया था।
- अगला शासक देवपाल बना। इसी ने राजधानी मुंगेर को बनाया था। इसके दरबार में अरबयात्री सुलेमान आया था। इसने बंगाल को रूहमा शब्द से संबोधित किया था।
- इस वंश का अगला शासक महिपाल बना।
- महिपाल ने पाल वंश का विकास पुन: प्रारंभ किया। जिस कारण इसे पाल वंश का द्वितीय संस्थापक कहते हैं।
- इसने आदि दीपंकर नामक बौद्ध भिक्षुक के नेतृत्व में एक दूत मंडल तिब्बत में वज्रयान शाखा के प्रचार के लिए भेजा। इसी के काल में चोल शासक राजेन्द्र-I ने बंगाल पर आक्रमण कर दिया। जिस कारण पाल वंश बिखर गया।
- पाल वंश के अंतिम शासक मदनपाल थे। इनके मृत्यु के बाद पाल वंश का अंत हो गया।
- पाल वंश के स्थान पर बंगाल के क्षेत्र में सेन वंश का उदय हुआ।

सेन वंश

- इस वंश के संस्थापक सामंत सेन थे।
- सेन वंश की राजधानी लखनौती (नदिया), बंगाल में थीं।
- इस वंश का अगला शासक विजय सेन था।
- विजय सेन को इस वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- विजयसेन शैव धर्म का अनुयायी था।
- विजयसेन ने अपनी दो राजधानी बनायी थी। पहली राजधानी विजयपुर जो पश्चिम बंगाल में था। दूसरी राजधानी विक्रमपुर जो पूर्वी बंगाल में था। यह वर्तमान में बांग्लादेश में स्थित है।
- विजयसेन ने परमेश्वर, परमभट्टारक और महाराजाधिराज की उपाधियाँ धारण की थी।
- विजयसेन का उत्तराधिकारी वल्लाल सेन था।
- वल्लाल सेन विद्वान तथा समाज सुधारक था।
- दानसागर एवं अद्भुत सागर ग्रंथ की रचना वल्लाल सेन ने की थी।
- अद्भुत सागर की रचना के दौरान ही इनकी मृत्यु हो गई जिसके बाद लक्ष्मण सेन ने इसको पूरा किया था।
- इनके दरबार में जयदेव नामक विद्वान रहते थे।
- जयदेव ने गीत-गोविन्द नामक पुस्तक की रचना की।

- लक्ष्मण सेन के बाद कोई भी योग्य शासक नहीं बना, और 11वीं सदी के अंत में सेन वंश समाप्त हो गया।
- परमभागवत् की उपाधि लक्ष्मण सेन ने धारण की थी।
- लक्ष्मणसेन सेन वंश का प्रथम शासक था जिसने अपना अभिलेख हिन्दी में उत्कीर्ण करवाया था। इससे पहले अभिलेख प्राकृत भाषा में लिखा जाता था।

गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहार वंश की उत्पत्ति गुजरात व दक्षिण-पश्चिम राजस्थान में हुई थी।
- इस वंश के संस्थापक नागभट्ट-I थे।
- नागभट्ट–I ने मालबा के क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया था।
- प्रतिहारों के अभिलेख में इन्हें श्रीराम के छोटे भाई लक्ष्मण का वंशज बताया गया है।
- पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में सर्वप्रथम गुर्जर जाति का उल्लेख मिलता है।
- इस वंश का दूसरा सबसे प्रभावशाली शासक वत्सराज था और इसी ने कन्नौज के लिए त्रिस्तरीय संघर्ष में भाग लिया और कन्नौज को अपने क्षेत्र में मिला लिया।
- इस वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक मिहिरभोज बना, जिसने कन्नौज को अपनी पूर्ण राजधानी बना दीं।
- मिहिरभोज के उपलब्धियों की चर्चा उसके ग्वालियर प्रशस्ति अभिलेख में की गई है।
- मिहिरभोज ने गुर्जरों की शक्ति पराकाष्ठा पर पहुँचा दी थी।
- मिहिरभोज के पश्चात् उसका पुत्र महेन्द्रपाल शासक बना। इन्होंने राष्ट्रकूट शासक इंद्र तृतीय को पराजित किया।
- महेन्द्रपाल के दरबार में प्रसिद्ध विद्वान राजशेखर रहते थे। जिन्होंने कर्पूरीमंजरी, काव्यमीमांसा, बालरामायण आदि ग्रंथों की रचना किए।
- स्कंद पुराण में इस वंश को गुर्जर कहा गया।
- इस वंश का अंतिम शासक यशपाल बना। यशपाल के बाद यह वंश स्वत: समाप्त हो गया।

चंदेल वंश/जजाकभूक्ति वंश

- यह वंश मध्यप्रदेश के क्षेत्र में था। इसे जेजाकभूक्ति वंश भी कहा जाता है।
- इस वंश के संस्थापक नन्नुक थे।
- चंदेल शासक ने मंदिर निर्माण के क्षेत्र में बेसर शैली (द्रविड़ शैली + नागर शैली) को जन्म दिया।
- बेसर शैली को मिश्रित शैली भी कहते हैं। मध्य भारत में बनने वाली अधिकांश मंदिरें बेसर शैली में बनी है।
- इसने खजुराहो में विष्णु मंदिर बनवाया। इस मंदिर को खजुराहो का चतुर्भुज मंदिर भी कहते हैं।
- प्रारंभ में इसकी राजधानी कालिंजर (महोबा) थी। किन्तु बाद में इसे खजुराहो स्थानांतरित किया गया।
- इस वंश का अगला शासक यशोवर्मन बना।
- इस वंश का अगला शासक "धंग" था। यह शिव को मानता था।
- इसने खजुराहो में एक विशाल शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- इसे कंदरिया महादेव के नाम से भी जाना जाता है।
- इस मंदिर के परांगन में नंदी बैल की मूर्ति है। जो कि सबसे बड़ी नंदी बैल की प्रतिमा है।
- राजा धंग ने जिन्नाथ, विश्वनाथ और वैद्यनाथ मंदिर का निर्माण करवाया था।
- धंग ने प्रयाग में गंगा-यमुना के संगम पर जल समाधि ले ली।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक विद्याधर था। जिसने गुजरात के शासक **राज्यपाल** की हत्या कर दी। क्योंकि इसने महमूद गजनवी का सामना नहीं किया बल्कि डर से भाग गया।
- विद्याधर अकेला ऐसा भारतीय शासक था जिसने महमूद गजनवी की महत्वकांक्षाओं का सफलतापूर्वक विरोध किया।
- इस वंश का अंतिम शासक परमर्दिदेव था, जिसे पृथ्वीराज चौहान-III ने पराजित कर दिया और उसके क्षेत्र को मिला लिया।
- आल्हा रूदल दोनों भाई परमर्दिदेव का सेनापति था जो पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध करते समय उनकी मृत्यु हो गई।
- परमर्दिदेव ने कुतुबद्दीन ऐबक की अधिनता स्वीकार कर ली जिसके कारण उसके मंत्री अजयदेव ने उनकी हत्या कर दी थी।
- अंतत: कुतुबद्दीन ऐबक ने पृथ्वीराज चौहान को हराकर दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

कुछ छोटे राजवंश

1. मैत्रक वंश

- इसके संस्थापक भट्टारक थे। यह वंश गुजरात के सौराष्ट्र में था।
- इसकी राजधानी वल्लभी थी, जो जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र थी।
- ये गुप्तों के सामंत थे।

2. कल्चूरी वंश (चेदी वंश)

- यह मध्यप्रदेश के त्रिपुरी के क्षेत्र में था।
- इस वंश के संस्थापक कोक्कल-I थे।
- इन्होंने अपनी राजधानी त्रिपुरी को बनाया।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक गंगेय देव था।
- इन्होंने विक्रमादित्य की उपाधि धारण किया।

3. गौड़ वंश

- यह बंगाल के क्षेत्र में था।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक शशांक था।
- इसने राजवर्धन की हत्या कर दी तथा महाबोधि वृक्ष को कटवाकर इसके जड़ों में आग लगा दिया।
- इसकी हत्या हर्षवर्धन ने कर दी, जिसके बाद यह वंश स्वत: ही धीरे-धीरे समाप्त हो गया।

4. पूर्वी गंग वंश

- यह उड़ीसा तथा आंध्रप्रदेश में था।
- इस वंश के संस्थापक आनन्द वर्मन ने पूरी में जगन्नाथ मंदिर बनवाया।
- इस वंश के शासक नरसिंह-I ने कोणार्क में सूर्य मंदिर बनवाया, जिसे Black Pagoda भी कहते हैं।
- इस वंश के शासक नरसिंह देव ने भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर बनवाया।

काकतिया वंश (तेलंगाना)

- यह तेलंगाना के क्षेत्र में एक छोटा-सा वंश था।
- इसके संस्थापक बीटा प्रथम थे।
- इस वंश का अगला शासक रूद्र प्रथम बना। इसने अपनी राजधानी वारंगल को बनाया।
- इस वंश का अगला शासक प्रतापरूद्र देव था, जिसके शासन काल में मलिक काफूर ने आक्रमण किया।
- इसने बिना लड़े अधीनता स्वीकार कर ली और अपनी सोने की प्रतिमा को जंजीर लगाकर तथा कोहिनूर हीरा अल्लाउद्दीन खिलजी के दरबार में भेंट किया।
- इसके बाद यह वंश स्वत: समाप्त हो गया।
- इस वंश पर अल्लाउद्दीन खिलजी का अधिकार हो गया।

यादव वंश

- यह महाराष्ट्र के देवगिरि के क्षेत्र में था।
- इसके संस्थापक भिल्लम-V थे।
- इसकी राजधानी देवगिरि थी।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक सिंहन्न था।
- इस वंश के शासक रामचंद्र देव को मल्लिक काफूर ने पराजित कर दिया किन्तु इसकी वीरता को देखकर अल्लाउद्दीन खिलजी ने इसे देवगिरि का जागीरदार बना दिया।

होयशल वंश

- ये यादव वंश के सामंत थे। इन्होंने अपनी राजधानी द्वारसमुद्र (आधुनिक हलेविड) को बनाया।
- इस वंश के संस्थापक विष्णुवर्मन थे।
- इन्होंने वेल्लूर में चेन्ना केशव मंदिर बनवाया।
- इस वंश का अंतिम शासक वीरवल्लाल तृतीय था। जिसे मल्लिक काफूर ने पराजित कर दिया और यह वंश समाप्त हो गया।

कश्मीर का इतिहास

- कश्मीर के इतिहास के बारे में जानकारी संस्कृत के कल्हण की पुस्तक राजतरंगिणी से मिलती है।

➢ **राजतरंगिणी**

➢ यह ऐसा संस्कृत साहित्य है जिसमें क्रमबद्ध तरीके से इतिहास लिखने का पहली बार प्रयास किया गया।

- यह ग्रंथ ऐतिहासिक रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि कल्हण ने पक्षपात रहित होकर राजा के गुण और दोषों का वर्णन किया है।

➢ **इसमें तीन वंशों की जानकारी हैं–**

(i) कार्कोट वंश
(ii) उत्पल वंश
(iii) लोहार वंश

(i) कार्कोट वंश (598 ई.-855 ई.)

- इस वंश के संस्थापक दुर्लभवर्धन थे। इसके दरबार में ह्वेनसांग (कश्मीर) आया था।
- इस वंश का शासक तारापिंड सबसे क्रूर शासक था।
- इस वंश का सबसे योग्य शासक "ललितादित्य मुक्तापिड" था। जिसने मालवा के चंदेल शासक यशोवर्मन को पराजित कर दिया।
- कश्मीर में सूर्य का प्रसिद्ध मार्तण्ड मन्दिर ललितादित्य द्वारा बनवाया गया था।
- तक्षशिला, राजपूताना, सिंहपुर, उर्शा और पुंच इसी वंश का क्षेत्र था।
- दामोदर गुप्त, उद्भट्ट तथा क्षीर नामक विद्वान जयापिड के दरबार में रहा करता था।
- इस वंश का अंतिम शासक उत्पलापीड़ को मंत्री ने राज्यच्युत करके अवंतिवर्मन को गद्दी पर बैठाया और कार्कोट वंश का अंत हुआ।

(ii) उत्पल वंश

- कार्कोट वंश के बाद कश्मीर पर उत्पल वंश का अधिकार हुआ।
- इस वंश का संस्थापक अवन्तिवर्मन थे। इन्होंने अवन्तिपुर नामक नगर बनवाई।
- रत्नाकार एवं आनंदवर्धन नामक कवि अवन्तिवर्मन के दरबार में रहा करते थे।
- अवन्तिवर्मन का योग्य मंत्री शूर था।
- अवन्तिवर्मन के समय सूय्य नामक अभियंता ने नहरों से सिंचाई का निर्माण करवाया था।
- अवन्तिवर्मन का उत्तराधिकारी शंकरवर्मन ने गुर्जर को जीतकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- अवन्तिवर्मन की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी सुगंधा ने शासन की।
- इस वंश में प्रथम महत्वकांक्षी शासिका रानी दिद्दा थी जो क्षेमगुप्त की पत्नी थी।
- इनकी मृत्यु के बाद इस वंश की बागडोर संग्रामराज के हाथ में आई। किन्तु संग्रामराज इस वंश का अंत करके लोहार वंश की स्थापना कर दी।

(iii) लोहार वंश

- उत्पल्ल वंश के बाद लोहार वंश आया।
- इस वंश के संस्थापक संग्रामराज थे।

- ☞ संग्रामराज ने अपने मंत्री तुंग को भट्टिंडा के शाही शासक त्रिलोचनपाल की ओर से महमूद गजनवी से लड़ने के लिए भेजा।
- ☞ इस वंश का शासक 'हर्ष' एक योग्य शासक था।
- ☞ इसके समय कश्मीर में भीषण अकाल पड़ा। इसने नीरों की उपाधि धारण की।
- ☞ हर्ष स्वयं एक कवि था और कई भाषाओं एवं विद्याओं का ज्ञाता भी था। इसके दरबार में कल्हण नामक विद्वान रहते थे।
- ☞ इस वंश का अंतिम शासक जयसिंह था।
- ☞ इन्हीं के काल में ''राजतरंगिणी' पुस्तक पूर्ण हुई थी।
- ☞ इसके बाद कश्मीर पर यवन आक्रमण हो गया।
- ☞ यवन आक्रमण के बाद कश्मीर पर तुर्क शासकों ने अधिकार कर लिया।
- ☞ सबसे योग्य तुर्क शासक 'जैनूल-आबे-दीन' थे।
- ☞ इन्हें कश्मीर का अकबर कहा जाता है।

वर्मन वंश (कामरूप असम)

- ☞ असम का प्राचीन नाम कामरूप था।
- ☞ इस वंश का संस्थापक पुष्यवर्मन था। यह समुद्रगुप्त के समकालीन था।
- ☞ असम को पहले प्रयागज्योतिषपुर भी कहा जाता था। यह पुष्यपुर की राजधानी थी।
- ☞ इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक भूतिवर्मन था।
- ☞ स्थितवर्मन ने दो अश्वमेघ यज्ञ करवाया था।
- ☞ इस वंश का अंतिम शासक भास्करवर्मन था।
- ☞ पुष्यभूति वंश के हर्षवर्धन ने समस्त कामरूप के साथ बंगाल के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया और इसी के साथ कामरूप के वर्मन वंश का अंत हो गया।
- ☞ अंत में कामरूप पालवंश का अंग बन गया।

मूर्तिकला तथा मंदिर निर्माण की शैली

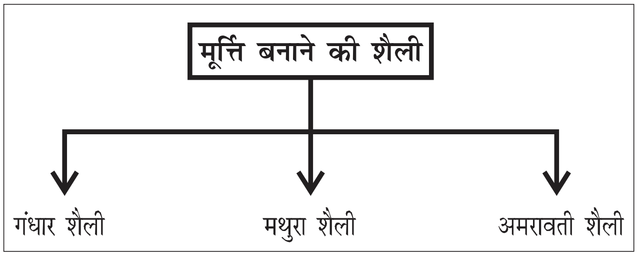

(i) गंधार शैली– इस शैली का विकास कुषाण वंश के प्रमुख शासक कनिष्क के शासन काल में हुआ था।

- ☞ सबसे पहले इस शैली में मुर्त्ति मिट्टी, चुना और प्लास्टर को मिलाकर बनाई जाती थी लेकिन इस प्रकार की मुर्त्ति बहुत कमजोर होती थी इसलिए बाद में ये काले और भूरे रंग के पत्थर से बनाए जाने लगे।
- ☞ ये मुर्त्तियाँ मुख्य रूप से पश्चिमोत्तर भारत में बनाई जाती थी। जिसका प्रमुख केन्द्र तक्षशिला था।
- ☞ इस शैली की 95% मूर्त्तियाँ महात्मा बुद्ध की बनी थी।
- ☞ इस शैली में महात्मा बुद्ध के बहुत बड़े घुंघराले बाल दिखाए गए हैं।
- ☞ इस शैली में महात्मा बुद्ध को बहुत बलशाली, बलिष्ट शरीर (गठिला), योग करते हुए, ध्यान की मुद्रा में और युवा अवस्था में दिखाया गया है।
- ☞ इसमें महात्मा बुद्ध के पीछे होलोमंडल या प्रभामंडल सेप दिखाई गई है। कपड़े को दोनों ओर से लपेटकर पूरा शरीर ढका हुआ है।
- ☞ इस शैली का उल्लेख वैदिक एवं सांस्कृतिक साहित्य में है। यह कला युनान से प्रभावित है। इसलिए इसे ग्रीक इंडियन कला भी कहा जाता है।
- ☞ इस कला में मूर्त्ति बैठी, खड़ी, आँखे बंद, योग और ध्यान मुद्रा में बनाई गई है।
- ☞ यह शैली अपोलो देवता से प्रभावित है।

(ii) मथुरा शैली– मथुरा शैली का विकास मुख्यत: उत्तर भारत में हुए थे।

- ☞ मथुरा, वाराणसी और कौशाम्बी इसके प्रमुख केन्द्र थे। इसकी शुरूआत मथुरा से हुई इसलिए इसे मथुरा शैली कहा जाता था।

- इस शैली में चौड़ा सीना, बालविहिन और नग्न मूत्तियाँ भी थी। ज्यादातर मुत्तियों में बायां हाथ आस्नस्थ है और दाहिने हाथ को अभय मुद्रा (आशिर्वाद) में उठाये हुए हैं और कपड़े बाएं कंधे पर पड़े हुए हैं।

➤ **इस शैली में तीन धर्म की मूर्त्तियाँ मिलती है–**
बौद्ध, जैन एवं हिन्दू।

- यह शैली पूर्णत: भारतीय शैली थी। इसमें लाल रंग के पत्थर का प्रयोग हुआ है।

(iii) अमरावती शैली– इस शैली का विस्तार मुख्यत: दक्षिण भारत में हुई थी।

- इस शैली में पूजा और योग को दिखलाकर कहानियों को बताया गया है।
- इसमें कई मुत्तियाँ एक साथ बनाई गई थी।
- इस शैली की मुत्तियाँ मुख्यत: सफेद संगमरमर की बनाई जाती थी।
- इस कला की मुर्त्तियाँ जातक कथाओं की है और इसे चित्रण के माध्यम से बनाया गया है।
- ये दक्षिण भारत के आंध्रप्रदेश के अमरावती नामक स्थान पर विकास हुआ। इसलिए इसे अमरावती शैली कहा जाता था।

शैली	जगह	रंग	वंश	धर्म	अवस्था	संकेत
गंधार	पश्चिम भारत	काला	कुषाण	बौद्ध	योग	चिंता
मथुरा	उत्तर भारत	लाल	कुषाण	बौद्ध + जैन + हिन्दू	आशिर्वाद	प्रसन्नता
अमरावती	दक्षिण भारत	सफेद	सातवाहन	बौद्ध	ग्रुप	कहानी

स्थापत्य कला

- भारत में स्थापत्य कला में मंदिरों के निर्माण की शैली बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रखती है।
- भारत में प्रमुख रूप से मंदिरों के निर्माण की जो शैली है वह मौर्य काल से प्रारंभ होती है और गुप्त काल में अपने चरम पर होती है।
- मंदिरों का वर्तमान स्वरूप गुप्त काल की है।

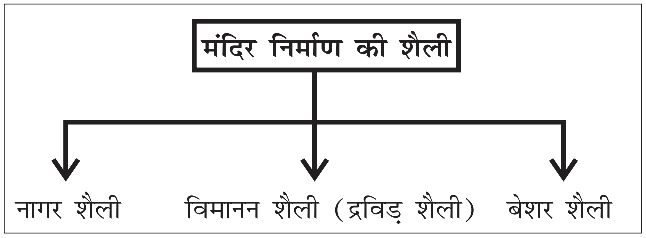

(i) नागर शैली– नागर शैली की मंदिर उत्तर भारत में देखने को मिलते हैं।

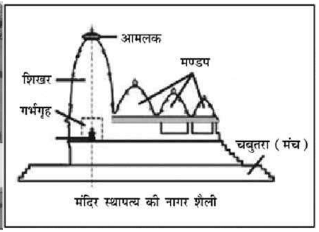

- यह उत्तर भारत में हिमालय से लेकर विंध्याचल पर्वत तक मिलते हैं।
- नागर शैली की मंदिर का जो गुबंद होता है। वह नीचे चौड़ा होता है और जैसे-जैसे ऊपर जाता है पतला होते जाता है। यह गुबंद रेखीय होता है जिसे शिखर कहा जाता था शिखर के ऊपर एक रिंग बना दिया जाता है जिसे आमलक कहा जाता था और आमलक के ऊपर एक कलश रख जाता था और कलश के बगल में एक ध्वज रखा जाता था।
- इसके शिखर ऊँचे नहीं होते हैं। शिखर के नीचे भगवान की मूर्त्ति रखी जाती है जहाँ भगवान की मूर्त्ति रखी जाती है उसे गर्भ गृह कहते हैं।
- पूरे मंदिर का सबसे प्रमुख जगह गर्भ गृह ही होता है।
- गर्भ गृह में ज्यादा भीड़ न हो इसलिए उसमें कई मंडप बने होते हैं ताकी वहाँ लोग प्रतिक्षा कर सके।
- गर्भ गृह के दरवाजे पर गंगा और यमुना की मूर्त्ति की लगी होती थी।
- इस शैली की मंदिरो में दो प्रकार की सीढ़ी होती थी शुरूआत की जो सीढ़ी होती थी उसे जगती, चबुतरा जबकि अगली सीढ़ी को पिठ कहा जाता था।
- गर्भ गृह ओर मंडप के बीच खाली जगह नहीं होते थे। गर्भ गृह के अंदर ही प्रदक्षिणा पथ (परिक्रमा) होता था।
- नागर शैली की मंदिर कभी भी अकेली नहीं होती थी। इसे पांच मंदिर के ग्रुप में बनाया जाता था। इसीलिए इसे पंचायतन शैली भी कहा जाता था।
- इस मंदिर के चारों ओर चारदीवारी नहीं रहती थी। यहाँ किसी भी प्रकार का तलाब नहीं होता था क्योंकि उत्तर भारत में नदियों की कोई कमी नहीं है और मंदिर में कोई भव्य द्वार नहीं होता था।
- इस शैली की कई विशेषता थी जो उड़ीसा में है उसे उड़िया शैली कहते है। इसकी एक शाखा मध्य प्रदेश में है जो कंदरिया महादेव खजुराहो का मंदिर है।

☞ एक शाखा गुजरात में भी है जिसे सोलंकी शैली कहते हैं।

(ii) विमानन शैली/द्रविड़ शैली– द्रविड़ शैली का विकास चोल और पल्लव काल में हुए थे।

☞ ये मंदिर हमें दक्षिण भारत में देखने को मिलती हैं।
☞ दक्षिण भारत में पानी की कमी होती थी इसलिए इस शैली में निर्मित मंदिर के आस-पास तालाब होते थे।
☞ यह शैली कृष्णा नदी से लेकर पूरे दक्षिण भारत में है। इस शैली में भव्य मुख्य द्वार होते थे। जिसे हमलोग गोपुरम या गोपुरा कहते थे।
☞ मुख्य द्वार के कारण ही वहाँ चारदिवारी बनी होती थी।
☞ यह मंदिर भी पंचायतन शैली में ही था।
☞ मंदिर बीच में रहती थी इस शैली की मंदिर सीढ़ीनुमा होती थी और सीढ़ीनुमा को ही विमानन कहा जाता था। इसी कारण इस शैली को विमानन शैली भी कहा जाता था।
☞ विमानन शैली में मंडप और गर्भ गृह सटा नहीं रहता है। उसमें अंतराल रहता है क्योंकि यही पर परिक्रमा किया जाता है।
☞ गर्भ गृह के बाहर दरवाजे पर यक्ष और यक्षीणी की मूर्त्ति लगी रहती है।

(iii) बेसर शैली– यह शैली नागर और द्रविड़ शैली का मिश्रित रूप है।

☞ यह शैली विंध्य से लेखकर कृष्णा नदी तक मिलता है।
☞ इसमें खुले प्रदक्षिणा पथ होता है और मण्डप बहुत सुसज्जित होता है।

➢ **कुछ प्रमुख शैली के उदाहरण–**
☞ नागर शैली – मीनाक्षी मंदिर (मदुरै)
☞ विजयनगर शैली – विट्ठल स्वामी मंदिर (विजय नगर), लोटस महल (हम्पी)
☞ होयशल शैली – सोमनाथपुर में केशव मंदिर (विष्णु को समर्पित)
☞ पाल शैली – चित्रकला

कुछ प्रमुख मंदिर और उसकी शैली

नागर शैली	
प्रमुख मंदिर	**शैली**
भितरगांव मंदिर	कानपुर
दशावतार मंदिर	झांसी
लक्ष्मण मंदिर	सिहपुर
कन्दरिया महादेव मंदिर	खजुराहो (एम.पी.)
लिंगराज मंदिर	भुवनेश्वर (उड़ीसा)
जगन्नाथ मंदिर	पुरी (उड़ीसा)
सूर्यमंदिर	कोणार्क उड़ीसा
द्रविड़ शैली	
प्रमुख मंदिर	**शैली**
वृहदेवश्वर मंदिर	तंजावुर
शिवमंदिर	गंगैयकोडचोलपुरम
महावलीपुरम रथ मंदिर	महावलिपुरम
वेसर शैली	
प्रमुख मंदिर	**शैली**
डोडा वेसप्पा	दम्बल
बादामी के मन्दिर	

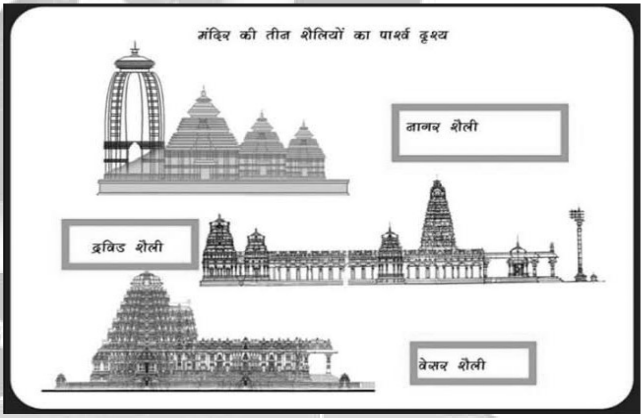

राजपूत काल (800ई.-1200ई.) या पूर्वमध्यकाल (800ई.-1200ई.)

☞ राजपूत काल को पूर्व मध्य काल भी कहा जाता है।
☞ राजपूत वंश के उदय के बारे में चंद्रबरदाई की पुस्तक ''पृथ्वीराज रासो'' से जानकारी मिलती है। इस पुस्तक के अनुसार माउन्ट आबू पर हुए एक अग्नि कुंड (हवन कुंड) से 4 वंशों का उदय हुआ, जो निम्नलिखित हैं–
(i) प्रतिहार
(ii) परमार
(iii) चालुक्य
(iv) चौहान

(i) प्रतिहार

- पीछे पढ़ चुके हैं।

(ii) परमार वंश

- यह वंश मध्यप्रदेश (मालवा) के क्षेत्र में था।
- इस वंश के शासक उपेन्द्र थे।
- इस वंश का सबसे योग्य शासक राजा भोज था।
- इन्होंने अपनी राजधानी धारानगरी को बनाई जो संस्कृत का प्रमुख केन्द्र था।
- इस काल में धारा नगरी में एक विशाल सरस्वती मंदिर की स्थापना की गई।
- इस काल में ज्योतिष का विकास सर्वाधिक हुआ।
- अंततः इस क्षेत्र पर दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया।

गुजरात का चालुक्य (सोलंकी)

- यह वंश गुजरात के क्षेत्र में था।
- इसके संस्थापक मूल राज थे।
- इस वंश का शासक भीम-I के सामंत विमलशाह थे। जिन्होंने वस्तुपाल तथा तेजपाल नामक अधिकारियों द्वारा दिलवाड़ा का जैन मंदिर बनवाया।
- महमूद गजनवी ने भीम-I के काल मे ही सोमनाथ मंदिर को लूटा था।
- भीम प्रथम के सेनानायक विमलशाह ने माउंट आबू पर प्रसिद्ध दिलवाड़ा का जैन मंदिर का निर्माण करवाया था।
- इस वंश का प्रतापी शासक भीम-II था। जिसने 1178 ई. में मोहम्मद गौरी को हराया था।
- यह मोहम्मद गोरी की भारत में प्रथम पराजय थी।
- अंततः इस वंश पर दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया।

चौहान वंश

- इस वंश का उदय जंगल देश में हुआ जिसे बाद में सपादलक्ष (सवा लाख गांव)कहा गया। जिसकी राजधानी अहिक्षत्रपुर थी।
- इस वंश के संस्थापक वासुदेव (सिंह राज) थे।
- इस वंश के सबसे योग्य शासक अरूणोराज थे, जिनके दरबार में संस्कृत के विद्वान विग्रहराज-IV विसलदेव रहते थे, जिन्होंने हरिकेली नामक संस्कृत नाट्य लिखा था।
- वाक्पतिराज–I ने सर्वप्रथम चौहानों में महाराज की उपाधि धारण की।
- इस वंश के अगले शासक पृथ्वीराज-III (चौहान) थे।
- पृथ्वीराज चौहान को रामपिथौरा भी कहा जाता है।
- पृथ्वीराज–III (चौहान) के पिता सोमेश्वर तथा माता (संरक्षिका) कर्पूरी देवी थी जो त्रिपुरी के कल्चूरी राजा अचलराज की पुत्री थी।
- पृथ्वीराज तृतीय के दरबार में जयानक, चन्दबरदाई, विश्वरूप, वागीश्वर, जनार्दन, विद्यापति गौड, आशाधार तथा पृथ्वीभट्ट आदि विद्वान रहते थे।
- चन्दबरदाई ने पृथ्वीराज रासो नामक ग्रंथ की रचना किया।
- इन्होंने जयचंद्र के साथ मिलकर तराईन के प्रथम युद्ध (1191 ई०) में मोहम्मद गोरी को पराजित कर दिया।
- पृथ्वीराज-III (चौहान) ने जयचंद्र की बेटी संयोगिता का अपहरण कर लिया और उससे विवाह कर लिया। जिस कारण जयचंद्र और पृथ्वीराज-III (चौहान)एक दूसरे के विरोधी हो गए।
- जयचंद्र ने मोहम्मद गोरी से मिलकर तराईन के द्वितीय युद्ध में (1192 ई०) में पृथ्वीराज-III (चौहान) की हत्या कर दी।
- तराइन का द्वितीय युद्ध भारतीय इतिहास में एक निर्णायक घटना थी।
- पृथ्वीराज तृतीय तराईन के युद्ध में **नाटयरम्भा** नामक घोड़ा तथा **रामप्रसाद** नामक हाथी पर सवार था।
- मोहम्मद गोरी ने 1194 ई० में चंदावर के युद्ध में जयचंद्र की हत्या कर दी।
- मोहम्मद गोरी के गुलाम कुतुबद्दीन ऐबक ने दिल्ली तथा अजमेर पर आक्रमण करके चौहानों की सत्ता का अंत कर दिया।

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR